आभूषण की दमक सूर्य का तेज

सिटी रिपोर्टर.जयपुर

सूर्य रत्न, माणिक्य, याकूत, चुन्नी एवं रुबी आदि कई नामों से पहचाने जाने वाला रत्न माणिक्य भारतीय परंपराओं एवं ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य ग्रह के लिए पहने जाने वाला रत्न है। यह मूल्यवान रत्नों में से एक है। कबूतर के रक्त के समान लाल रंग के माणिक्य को उच्च कोटि का माना जाता है, किंतु शुद्ध लाल रंग माणिक्य में प्राकृतिक तौर पर दुर्लभ है। अधिकांशतः कत्थई, नीली आभा के साथ ही लाल रंग माणिक्य में देखने को मिलता है। यदि प्राकृतिक माणिक्य में (ऑल 4 "c" s) अर्थात कलर, क्लेरिटी, कट एवं कैरट साइज चारों बिंदु उपलब्ध हों तो माणिक्य अत्यन्त मूल्यवान एवं दुर्लभ श्रेणी का माना जाता है।

मीनू बृजेश व्यास
सहायक निदेशक, जीटीएल
gtl@gjepcindia.com

नेचुरल रूबी पृथ्वी के गर्भ से ट्राइगोनल सिस्टम में पिरामिडी एवं षट् कोणीय आकृति में पाया जाता है। क्रिस्टल्स लंबे एवं चपटे दोनों प्रकार के होते हैं। चपटे क्रिस्टल की ऊपरी सतह पर त्रिकोण आकृति के गड्ढे एवं उभार पाए जाते हैं, जिसे रत्न विज्ञान में ट्राइगोनल हिलोक्स एवं पिट्स कहा जाता है। पिरामिडी क्रिस्टल्स पर आड़ी धारियां मुख्य पहचान है। माणिक्य पॅबल (नदी, समुद्र, तालाब आदि में पाए जाने वाले गोल पत्थर) के रूप में भी मिलते हैं। पॅबल में क्रिस्टल पद्धति एवं सतह पर पाए जाने वाले विशेष लक्षण परिलक्षित नहीं होते हैं। उच्चकोटि की कठोरता (म्होस स्केल के अनुसार-9) एवं उच्च स्पेसिफिक ग्रेविटी (3.98 से 4.00) होने के कारण माणिक्य अच्छी चमक एवं अधिक भार वाला रत्न है। उच्चकोटि की चमक का कारण इसका उच्च वक्रीभवनांकद (1.76 -1.) भी है। नेचुरल माणिक्य पारदर्शक से अपारदर्शक भी होते हैं। विविध वर्णता प्रबल होने के कारण माणिक्य उठाकर देखने पर नारंगी एवं लाल दो रंगों की आभा दिखाता है, जोकि इसके समान ही दिखने वाले कांच, स्पीनेल एवं गार्नेट में दिखाई नहीं देती है। प्राकृतिक माणिक्य की पहचान उसमें पाए जाने वाले अंतरावेशी अथवा इन्क्लूजन का सूक्ष्म अध्ययन करने पर ही की जा सकती है। वैसे जौहरी की नजर से देखा जाए तो रत्न में जितने कम इन्क्लूजन होंगे रत्न उतना ही उत्तम श्रेणी का होगा, किंतु रत्न में पाए जाने वाले इन्क्लूजन इसकी पहचान में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। कई बार तो यह अंतरावेशी रत्न के प्राकृतिक होने के प्रमाण के साथ-साथ इनके स्त्रोत का भी संकेत देते हैं। माणिक्य में कई प्रकार के इन्क्लूजन पाए जाते हैं, उनमें मुख्यतः क्रिस्टल्स या मणिभ है जो कि केल्साइट, ऐपेटाइट, डोलोमाइट, जरकन आदि के होते हैं।

माणिक्य राशि रत्नों में तो अपना प्रमुख स्थान रखता ही है। वेशभूषा में भी इसका प्रचुर उपयोग किया जाता है। अपारदर्शी क्वालिटी के माणिक्य को कार्विंग्स के काम लिया जाता है।

नेचुरल रूबी को सिंथेटिक से अलग करने की विधि अगले अंक में...

इनके साथ ही स्टाइल की सूई समान संरचना वाले तंतु तीन दिशात्मक व्यवस्थित होते हैं। जिसे रत्न विज्ञान की भाषा में सिल्क के नाम से जाना जाता है। जब स्टाइल के तंतु बहुत छोटे-छोटे हों और सिल्क की संरचना कर रहे हों तो शॉर्ट सिल्क एवं तंतु लंबे-लंबे हों तो लोंग सिल्क बोला जाता है। यदि ऐसे में रत्न को काबोचॉन या पोटा रूप में काटा जाए तो रत्न की सतह पर तारांकन (स्टार) प्रभाव देखने को मिलता है, जिसे बाजार में स्टार रूबी के नाम से जाना जाता है। माणिक्य आग्नेय चट्टानों और अधिकतर मार्बल और डोलोमाइट के निक्षेपों में पाया जाता है। भारत में (उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, कांगायेम-करुर एवं कर्नाटक) और संसार में अन्य प्रमुख देशों में प्रमुखतया-बर्मा (मोगोक, मोंगशू, मामया), थाईलैंड (कंचन-बुरी, शांता-बुरी), मेडागास्कर (इला-काका, वेटोमेंड्री), श्रीलंका (द्वीप के दक्षिणी हिस्सों में), मोजाम्बिक (नियासा, केबोडेल गेडो), वियतनाम (लूक, येन) अफगानिस्तान (जगदालेक), पाकिस्तान (हुन्जा वेली), केन्या (मंगारी, गारवेतुला), तंजानिया (मोरोगोरो, लोंगिडो, सोंगिया एवं विन्जा) आदि में पाया जाता है। इनमें कुछ स्थान जैसे बर्मा का मोगोक क्षेत्र पूर्णतया खाली हो चुका है अथवा वहां अब माणिक्य होने की संभावना लगभग लुप्त हो गई है। पूर्ण सुंदरता विद्यमान होने के कारण बर्मीज माणिक्य विश्व में सर्वोपरि स्थान रखता है। बर्मीज माणिक्य में शॉर्ट सिल्क, ऐपेटाइट एवं केलसाइट के क्रिस्टल्स पाए जाते हैं।